



RASATH
"The Secret of Style"

Aashiyana
Tussar silk





RAPATH
"The Secret of Style"
10032
Tussar silk



यथा चतुर्भिः कनकं परिहृतं चित्परणुद्धवम तापताडनेन।
तथा चतुर्भिः श्लेषः परीक्ष्यते त्वामेव शीतलं गुरोः कर्मणा।।



यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति। अमोक्ष्यमान्स्वामिन्नामो भक्तिमत्सु॥ स न श्रेयसे॥



RAJPATH
"The Secret of Style"

10033

Tussar silk



RAPATH
"The Secret of Style"

10031
Tusser silk





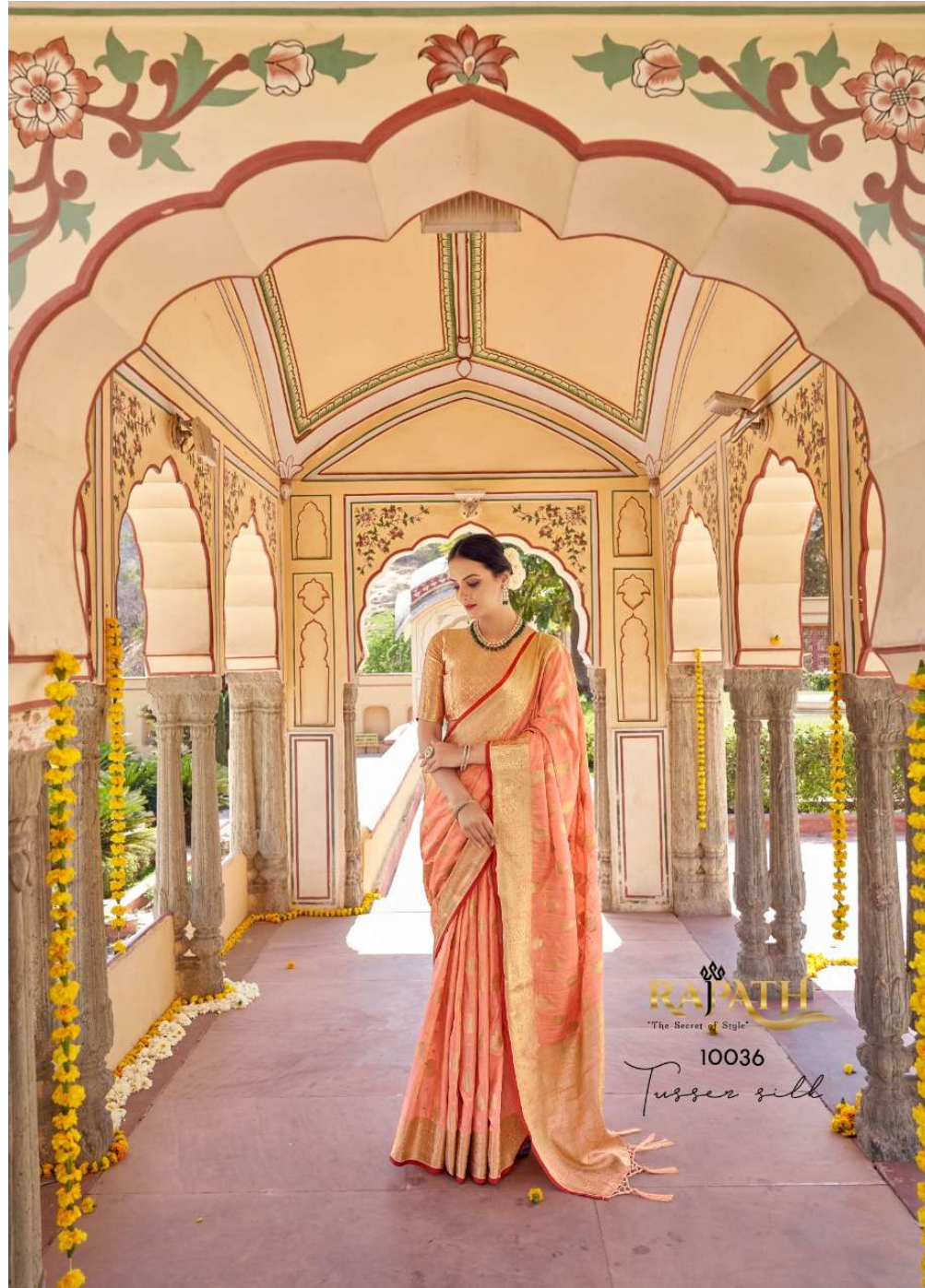
यो न हृदयति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति। शुभाशुभपरिचयापी
भक्तिभावतः स मे प्रियः॥

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥





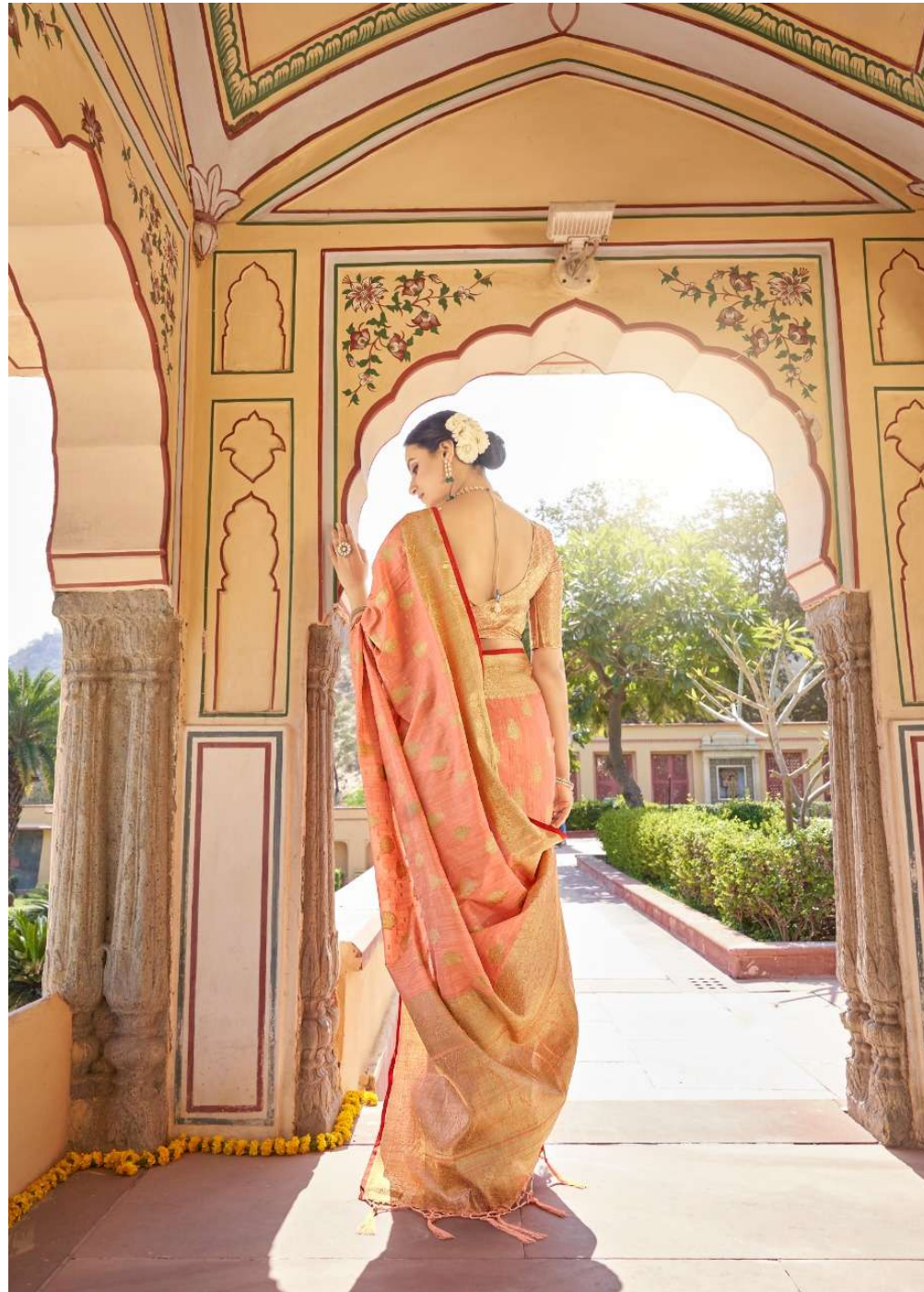
RAPATH
"The Secret of Style"
10035
Tusser silk



RAJPATH
"The Secret of Style"

10036
Tussar silk







यो न हृष्यति न क्षिष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥



RAJATH
"The Secret of Style"
10034
Tussar silk



10034



10035



10036





10031



10032



10033